

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि  
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

## Contents :-

Page 1

- 1) Sharada Stotra.
- 2) Editor's Foreword.

- 1) Master Zinda Kaul by AK Khazanchi.
- 2) Parts of Body Head.

- 1) How to read Kashmiri Devanagri script.

- 1) Isha Upnishad by AK Razdan.
- 2) A collection of Single verses by Shridharji Bhatt.

- 1) Kids Rhymes in Kashmiri.
- 2) Sharada Varanmala.
- 3) History of Sharada Lipi by Rakesh Koul.
- 4) Shiv Vandan by Indira Kilam.

- 1) Abhinav Gupta by Vinutha Saligram.

- 1) Kashmir by Kishni Pandita.

- 1) Koyee Apna Sa by Kusum Warikoo.

- 1) Swami Parmanadaji by AK Razdan.

- 1) Core Sharada Team at Vishva Sarasavath Sangh.
- 2) Sharada Diwas 2022.

- 1) Artwork for the month on Social media.
- 2) Donation appeal.
- 3) Contact Details.
- 4) Activity Chart of previous month.

Designed by Sunil Mahnoori

Editor:- Kuldip Dhar

Supporting Editors :- Veronica Peer  
Parul Bradu

## मभरुकीष

नवरोड भुगराण

दिनु नव वरु की मुठकाभनारि

भाउ का भनीन महुंउ नी वृमु ररु। पुरंरु में मिवररु, दिर पीण  
ररुं में विणनभरु के एनव, वृरुन उर रुम की एंग उर महुं में  
“दि कमीर डालरु” का एलणिरु। पुरु में वरु पुररुन है मगी अएनवें  
महुंउ: भनव कलघन के लिए ीक मरुिउ है। मेरु रिभा भनन है कि  
ए केरु ही अएन अएनी है उम में महुंउ: केरु लरु मवमृ देउ है। मुए रुम  
व उे महुंउ एम है व निरुम व म्पापी पर रुमें मपने मुप के पुरु की डम्लू में  
मभरु कर लेन एरुिबे।

केरु मरुए मभरु मरुए लिपि के पेङ्करुन में वृमु ररुनी। वरु मुप के रुभरु  
भाउ भरु की गडिविणिमें मे पउ दे गव देगा।

वृरुिगउ रुप में मभरु रिंरु के ल एनी की पुमुक “भरु” ने भुए एरुं  
वृरुउ पुरविउ किष, वरुं मेरे भिरु के अर एक रुष मे लापी कमभीरी  
में रभरुन टोपने व पउने का मवमरु भिलने पर रुद रुव। भुए वामदेव  
“रेरु” एनी, मेपेर कमभीर के ररुने वरु, की कमभीरी देवनगरी में लापी  
“वदु देउरु” ही पउने का उभरु भिल। रुं एभन लाल ररुं एनी की  
पुमुक “कसुर मरुिवाए” रुर एक कमभीरी एनने वरु के मवमृ पउनी  
एरुिग। उम पुमुक मे कमभीरी पंरुिउे की “मरु” मरुुउाउ के मरुं में  
मरुुी पुररु मे वृपृ की गरु है। मेरु वरु निवेदन है कि मरुिका का रुर  
एक पंक कमभीरी देवनगरी पउने व लापने का प्थम मवमृ करु रिभ  
मे वरु विरुिउ लेपे का लरु ले मकेगे।

रुभरु प्थम है कि मरुिका में निरुंउर रुक रिउ विधमें पर लिपि  
व पुरमिउ करु। मुम है मुप के वरु पमंरु मु ररु है। मुप के मरुुवे /  
एरुिणमें के पुरन में राप के रुम निरुंउर प्थम करुउे ररुगे। मरुिका  
की मभरुकीष एीम/ मभरु ने वरु निरुव लिष है कि उम भरु के उपगंउ  
मरुिका रुर दे भरु में पुरमिउ देगी। उम करु मरुुी मरुिका मरु  
एन ३०३ में पुरमिउ देगी।

कुलदीप एर

By A.K. Khazanchi

# लोलु दयस प्रार्थना / लोलु दयस प्रार्थना

मास्टर जिंदु कोल जी की पुस्तक स्मरण, जो कि श्री ए के राजदान जी ने हमें भेजी, से उन की कशमीरी में लिखी कविताएं प्रस्तुत हैं। इन को श्री ए के खजांची जी ने कोर शारदा समूह प्रोत्साहित कशमीरी देवनागरी में लिखा है।  
योर आमुत गिंदुने

१. वुछिम गथ चान्य देवागथ,  
चे विन दय नो सॅरय लोलो।  
मे अन्दर कर पनुन मनदर,  
बु च्चेय पूजाह करय लोलो॥
२. बु चाने वेरि सोंबरावय,  
अंछव किन्य रंग रूपुक रसा।  
कनव किन्य शबदु साजुक मस,  
अनिथ खास्यन बरय लोलो॥
३. मे कुन वुछ वुछ आसान छुख,  
दूरि रूजिथ आसमानन मंज्रा।  
गुपिथ छुख दासतानन मंज,  
यि दूर्यर नो जरय लोलो।
४. फिजा त्राविथ मे खनिमुत्य जिस्स्य,  
जमीनस तल तु पूरुन्य छिमा।  
स्यठा देवार लुहरुन्य छिम,  
चे रोस्तुय क्याह करय लोलो।
५. बु छुस पोंपुर चे दीपस पथ,  
च्रटिथ यिम जामु करहां गथा।  
दिहम नय जामु च्रटनुच वथ,  
क्योमाह ह्युव मा मरय लोलो॥
६. नितम पम्पोश पादन तल,  
तिमन हुंद बोम्बराह सूजिथा।  
कंड्यन प्यठ छुस मेरु रूजिथ  
बु चान्ये आसरय लोलो॥
७. जमीनस जन्मुकिस वविमुत्य  
अशक दुरदानु केह बविमुत्य  
अंछन मंज्र छिम रंछिथ  
थविमुत्य  
तिमय खावे जरय लोलो॥
८. यिमन जोयन अन्दर यँदुवय,  
छु चाने सहजु दरमुक जला।  
बठ्यन हुंद छुस सम्प्योमुत मल,  
मे चावुम आगरय लोलो
९. पनुन मे तेजकुय आगुर  
यिमन जर्नन अन्दर बासुन  
कुन्यर बाविथ यि दुय कासुम  
गटे हुंदि गाशरय लोलो॥

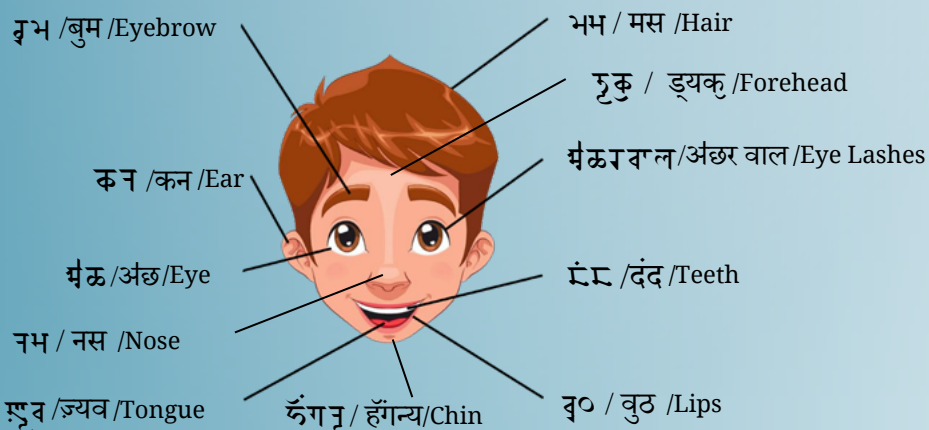
भाभूर सिंदु केन एी की पुभुक  
भूरु, से कि मी ए के गण्डान एी  
चे रुमे हसी, मे उन की कमभीरी मे  
लापी कवितां पभरुउ कै, उन के मी  
ए के पदंणी एी चे केर मारण  
मभरु पेङ्गकिउ कमभीरी देवनागरी मे  
लापा कै।

चेर मुभउ गिंदुने

०. वुछिम गथ एांनु देवागथ,  
गे विन दय ने मॅरय लैलै।  
मे मरुन कर पनुन मनदर,  
गु ऐष पुररु करय लैलै॥
१. गु एांने वेरि भोंगरावथ,  
मंछव कितु रंग रुपुक रभा।  
कनव कितु मगणु भाएक भम,  
मनिष पाभृन गरय लैलै॥
२. मे कुन वुछ वुछ मुभान क्वाप,  
एरि रुएिष मुभानन भंए।  
गुपिष क्वाप एभउतन भंए,  
यि एटर ने एरय लैलै।
३. छिर इविष मे पंनिभुटु सिभु,  
एभीनम उल उ पुगुनु किभ

- मृण देवार लुहरुनु किभ,  
गे ऐभुष कुरु करय लैलै।
५. गु क्म पोंपुर गे दीपम पथ,  
एरिष विभ एभु करण गथा।  
एरिभ नय एभु एएनुउ वथ,  
कुभाक कृव भा भरय लैलै॥
६. निउम पभेस पाएन उल,  
डिभन कंए गेभुगरु मुएिष।  
कंरुन पुं क्म भरे रुएिष  
गु एांने मुभरय लैलै॥
७. एभीनम एचुकिभ वविभुटु  
ममकु एरएनु केंरु गविभुटु  
मंछन भंए किभ रंछिष षविभुटु  
डिभय एांने एरय लैलै॥
८. विभन ऐषन मरुन वंएवथ,  
क एांने मरुए एरभुक एला।  
गुन कंए क्म मभेभुटु भल,  
मे एांवभ मुगंरय लैलै
९. पनुन मे उँएकुय मुगुर  
विभन एरुन मरुन गभुन  
कुनुन गविष यि एय काभुभ  
गटे कंएि गामंरय लैलै॥

## Parts of the Body (Face/ वृष)



## Kashmiri Devanagari Script – How to Read & Write

**K**ashmiri Devanagari script was originally standarised in 2002-03 as recommended by an Expert Committee headed by Dr. Roop Krishan Bhat, after discussion on the same from 1995 to 2002. Most of the literature written during that time and after has been written following these standards. Even current Iphone Kashmiri Devanagari keyboard is developed on this basis. As per this standard the following Vowels and Consonants are used in writing Kashmiri in Devanagari Script.

### Hindi Vowels used in Kashmiri mostly before 2009

अ	आ	अँ	आँ	अु
	ा	ँ	ाँ	ु
अख	आराम	अँछ	लॉर	बु

अु	ओ	ओ	औ	अं
ु	ो	ो	ौ	ं
तुर	दोर	मोल	औशद	अंग

इ	ई	उ	ऊ	ए
ि	ी	ु	ू	े
खिर	शीन	बुथ	जून	रेल

ऐ	ऐ
ै	ै
वैकुंठ	रेह

### Consonants

क	ख	ग	च	छ	ज
ट	ठ	ड	त	थ	द
न	प	फ	ब	म	य
र	ल	व	श	स	ह

### Special Consonants

च़	छ़	ज़
----	----	----

### Consonants NOT used.

घ	ङ	झ	ञ	ढ	ण	ध	भ	ष	क्ष	ऋ	ॠ
---	---	---	---	---	---	---	---	---	-----	---	---

Dept. of Higher Education, Central Hindi Directorate, Ministry of HRD modified the standard in the year 2009. A Kashmiri Devanagari Unicode was accordingly developed, which is now available on Android phones. Sh. B.N. Betab, Sh. Shashi Shekhar Toshkhani and others were part of the team. As per the same the following Vowels are used in writing Kashmiri in Devanagari script.

### Kashmiri Devanagari – 2009 version

अ	आ	अँ	आँ	अु
	ा	ँ	ाँ	ु
अख	आराम	अँछ	लार	बु

अु	ओ	ओ	औ	अं
ु	ो	ो	ौ	ं
तुर	दोर	मोल	औशद	अंग

अँ	आँ	इ	ई	उ
ँ	ाँ	ि	ी	ु
खँड	गॉड	खिर	शीन	बुथ

ऊ	ए	ऐ	ऐ
ू	े	ै	ै
जून	रेल	वैकुंठ	रेह

We felt the need for sharing this to enable Kashmiri (Devanagari) readers to understand the literature that is available in public domain. We, at Core Sharada Team Foundation, for the sake of uniformity have decided to follow the 2009 standard, as this is essentially being used for writing in Sharada script by Core Sharada Team.

There may sometimes be certain deviations due to the contributors of the articles for Maatrika.



By A.K.Razdan

## श्री रामायणमुपनिषत् ॥

यस्यैव के गालीभवै मृगय के रामायणमुपनिषत् के नाम मे रत्न रत्न है। उभ उपनिषत् के ०३ उपनिषदें में प्रथम भूत प्राप्ति है। उभ उपनिषत् में विराण मूक्ति के मृगयत र्मृ एगता एर एवीन के रंश्वर का मुवाम करु कर रंश्वर के भववृषी, भवभभू भ्रुपका गेण कराते का एवीन के मृगयामन में गरिभाभय रंग मे भाप मंडेधप्रवक एवीते का उभी के भाषाक रुप के रने का निरुम मिया गया है। रामायणमुपनिषत् में कुल ०३ भंड है। एर वरु ०३ भंड श्रीभत्ता रगवल्लीता के ०३ मृगयै की उरु भद्रप्रु कके गये है। उभ उपनिषत् का प्ररु निभुलिपीपउ मन्त्रि पा० मे देता है....

उ प्रुभत्तः प्रुभितं प्रुत्ता प्रुभुत्तुते।

प्रुभु प्रुभत्ताय प्रुभेवामिधृते।

मृगता

रंश्वर परिप्रु है। एर एकि वे प्री उरु मे प्रु है, मृगय उतमे केने वले मारे उरुव ऐमे कि वरु र्मृ एगता प्रु उकारं के रुप में परिप्रु है। प्रु मे ऐ कुळउरुते देता है वरु ही मपने मुप में प्रु देता है। परभ प्रु वा भवेपरि परभ मृ प्रु प्रुभेडुभ रगवान है, उभ परिप्रु मे वमृपि कितनी ही प्रु उकाउर्यी ममुउ के उरु ही वे परिप्रु की ररुते है। उपनिषत् का परुला भंड ....

रंश्वरभुभितं भवं वद्विष्ठ एगता एगता

उत उरुते हुल्लीषा भा गणः कभु श्रिम्ता एनभा॥

मृगयत्त....

उभ र्गवाः के चीउर की प्रुत्तक एरु मषवा एउतन मग वभुर्ति रगवाना मृग निबंधित है। एर उरु की मभुत्ति है। मृगय मभु के गालिा कि मपने लिर केवल उरु वभुते के श्रीकार करे ऐ उभ के लिरा मुवमृक है। एर ऐ उभके पराग के रुप में निषउ कर मी गरं है। किभी एर के एन वा वभुते की कही ही मन में लालभा भउ करे।

एकि रगवाना प्रुभा - मग प्रकार मे प्रु है, उत पर ऐडिक प्रुति के निषम लागु केने की केरंभभुवन नकी है, कुंकि मारे निषम उतके निषरु मं ररुते है, परतु एवीन उषा एर पम्ता देने प्रुति के निषमें मृग एर मृगुः रगवाना की मक्ति मृग निबंधित देते है। रामेपनिषत् ऐ वस्यैव का मंम है उभ के परुले की भंड मे र्गवाः में म्रुउ मभु वभुते के मृभित के विषय में रनकारी भिलती है। उभ र्गवाः के चीउर के प्रुत्तक वभु पर रगवाना के मृभित की प्रुति रगवल्लीता के माउवे मृगय मे ही की गरं है। प्रुति के मग उरु - पृषी, एल, मयि, वायु, मुकाम, मन, वृष्टि उषा मरुकार - रगवान की मपामृगता ऐडिक मक्ति मे मभुत्ति है एर कि एवी मृगता एउतन मक्ति रगवान की उरुउर मक्ति(पर मक्ति) है। वरु देने की प्रुतिर्यी वा मक्तिर्यी रगवाना मे उरुउ है। एर मृगुगद्व ऐ कुळ ही विमृभान है उभ मग के निषरु रगवाना की है, प्रुत्तक वभु उत परभ प्रुध की मभुत्ति है। उभ रंश्वरीवमभुत्ति मे ऐ कुळ ही रुभारे पराग करे के मृगयार रुमे प्राप्ति रुमु है, रुमे उभी में मंडुष्टि प्राप्ति केनी गालिा॥



By Shridharji Bhatt

## A collection of scriptures in single verse

All of us know - In Hinduism there are many big and famous Indic Texts like - Ramayana, Mahabharata and Bhagavata etc. Here such big scriptures are given in just one verse each. All the four verses are written in shardula vikridita / शार्दूल विक्रीडित वृत्तः - Varna/ वर्ण chandas. We will have a look at all of them in our upcoming editions.

रामायणम् ॥

रामायणम् ॥

पूर्व राम तपोवनाभिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्  
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।  
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्  
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥

पूर्वं राम उपेवनाभिगमनं रुद्धा मृगं काञ्चनम् ।  
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।  
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्  
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥

Once upon a time, Lord Rama went to the forest , he chased and killed a golden deer. His wife Seethaji was kidnapped (By Ravana), the bird Jatayu was killed. There were discussions between Ramaji and Sugreeva. Wali(brother of Sugreeva) was killed. The sea was crossed( By Hanuman), Lanka was burnt. Later Ravana and Kumbhakarna were killed and this is the story of Ramayanam.

Ramayanam contains seven chapters - Bala Kanda, Ayodhya Kanda, Aranya Kanda, Kishkindha Kanda, Sundara Kanda, Yuddha Kanda and Uttara Kanda containing 24000 verses. This shloka describes the entire Ramayanam.







By Vinutha Saligram



## मुद्राट्ट मछिनवगुपु परिचय

**मु**द्राट्ट मछिनवगुपु एक सांख्यिक एवं भास्करिमाभू के भूतनृ मुद्राट्ट थे। कम्पीरी मैव छर उत्रु के परिचित थे। वे भंगीउल्ल, कवि, नाएकेकार, पद्ममाभूी एवं उरुमाभूी छी थे।

उनके उत्रु गुंघ उत्रुलेक में उनकी एीवनी का विवरण मिलता है। उनका अर मीनगर में विठामा के उए पर था। मछिनवगुपुने उत्रुलेक में उभका भविभार बलून किया है। मछिनवगुपु ने मपने तीन पुमुक - कुभभेउ, छैरव भेउ उषा रंश्वरपुट्टिल्लविवु डि विभञ्जिनी में उन गुंघे के रणनाकाल का उल्लाप किया है। उत्रुभार उनका मभय ७५० (950) रं. में लेकर ०७५ (1025) तक भाजा ए मकडा है।  
कृतियां

मुद्राट्ट मछिनवगुपु ने भास्करिक एवं सांख्यिक विचारों में भंगणितु मनेक गुंघे का रणना किया। उत्रुने कुल ८८ (44) गुंघे की रणना की थी, एिभमेमे गुरुउ भारी रणनाएं मग नष्ट के गरीं है। उनके कृतियें के गार छारों में गंए ए मकडा है।

## यमुद्राट्ट मछिनवगुपु की कृतियां

उत्रु	रुमन
<p>उत्रुलेक / उत्रुभार / उत्रेसुथ उत्रुवाएणिका / पट्टुपुसुमिका भालिनी विण्य वारुिक / पराडिमिका विवरण लक्ष्मी पुकिया / परभाऊ भार / पराडिमिका लपुवु डि कुभकेलि / ऐवीभेउविवरण / गरुभु पसुण्डमिका</p>	<p>रंश्वरपुट्टिल्ल विभञ्जिनी रंश्वरपुट्टिल्लविवु डि विभञ्जिनी / कषाभाप उिलक छेएवाए विवरण / मिवरुधुल्लेणन परभाऊ गरा / पुकीरुक विवरण छगवञ्जिता रुमंडगुरु / वैणपसुण्डमिका पसुण्डपुवेमनिरुथ एीका</p>
भेउ	कावृमाभू
<p>मनुचव निवेदन / मनुडुगुहिका भेउ कुभभेउ / छैरवभुव परभाऊ सुण्डमिका / भकेपसु विमडिका ऐरुभुऐवडा गकु भेउ / मिवमकृविनाछाव भेउ</p>	<p>मछिनवछारडि पुत्रुलेक लेणन कावृकेउक विवरण अएकरुणकुलकविवु डि</p>







By Kusum Warikoo

## कैरें मपन भा

एक्री का दरवाजा खींच कर जैसे ही मैंने पाँव अन्दर रखा 'कहाँ जाना है' उस की आवाज आई। पता तो लिख दिया है। मैंने दूसरा पाँव अन्दर खींचते हुए कहा। 'नही आया' वह बोला तो मैंने पता लिखा दिया। बस इतना सा वार्तालाप हुआ था हमारे बीच। 'ज्यादा ठंडा तो नहीं है।' आखिरी बार उसने पूछा तो मैं बोली 'नहीं ठीक है।' उसके बाद एक न टूटने वाली सुकून से भरी खामोशी। ज़हर लगते हैं वह लोग मुझे जो सफर में मेरी चुप्पी तोड़ने की कोशिश करते हैं। मैंने अपनी पीठ सीट से टिका कर आंखें मूंद ली। मेरे आई-पोड से छाया गांगुली की आवाज सदी की सुनहरी धूप सी छन छन कर मेरी नस नस में पिघल रही थी..... फूल बरसाता हुआ.....

मनु मुँपें में ही पता लग रहा था कि गैंगलोर की भरकें मग काद्री पारग के मुकी है। एंड्रलु ने एरेपेची में एर के गए पर पीभी गति में गाड़ी रुकी है। मैंने गैंग मभुला नीचे मुकर उम में पैसे पियो उम में मपन मुएकेम लिखा। उम मुगे मरु गरें। पानी पीने के लिए गैउल टोपी है पता मला कि एक्री में हुल मुगें थी। पीके टोपा है वरु निकल मुका था। एनडी थी कि मरुउ परेमा नी केगी। टिर याद मुया कि एक्री में पानी पी कर भाभने की भीए के एकए मेरापी थी।

भारग टिन काद्री वृभु रली। माभ के मभय भिला है टोपा एक एक एक एक मुया है। मीकात्रु वी एक ने लापा था। लापा था कि वरु भूए एक्री में मेहर उक लाया था। उम मरुउ नी एम था कि मैं मपनी गैउल गाड़ी में हुल मुगें कं। पडते नी भूए गुम्मे। उम कंभी टोने का एकमभ भाष में भरुभम रुमु। मुगे लापा था कि एम मैं मरुग एक्री का वली टिप उमुभाल करंगी है पाउंगी कि उम में ३० रुपये एभा है। वरु उमने उम पानी की गैउल के मरुले में एभा किर है। उम गैउल राप ली है। मेरी केके उम गरें। कृ भउलम - मेरी रुमरुगरें नएर मकी उमरुउ पे गरें है लगा वरु है

पूरी चिट्ठी है। अब मेरी जिज्ञासा और बढ़ गई। मैंने एक ही सांस में पूरा पढ़ डाला। उस का कहना था कि बहुत दिनों से बोतल खरीदना चाह रहा था कारण उस की हिचकियां उसे खाना खाते हुए आती हैं। और सिर्फ पानी पीने पर ही थमत है। ज्यादातर समय वह जहाँ पर होता है वहाँ उसे पानी नहीं मिलता।

और जो बोतल उसे पसंद आती वह मंहंगी होती है। ऐसा भी नहीं था कि लोग बोतल भूलते न थे लेकिन वह पलास्टिक की होती थी, ज्यादा देर इस्तेमाल नहीं कर सकते, सेहत के लिए हानीकारक है वह यह सब जानता था। विदेशी अच्छी मंहंगी बोतल भी भूल जाते हैं लेकिन वह उन्हें हाथ तक नहीं लगाता। कारण यह कि एक तो वह लोग बोतल से मूह लगा कर पानी पीते हैं दूसरा क्या जाने कोन बीमारी लगी हो। मेरी बोतल यू रखने का कारण था कि उसने देखा था कि मेने पानी मूह लगा कर नहीं बल्कि उपर से पिया था। चिट्ठी अभी ओर भी बाकी थी लिखा था कि वह जानता है बोतल मंहंगी है लेकिन 20 रुपये ठीक है। एक तो यह सेकमड हेन्ड है और उस से बड़ा कारण कि बोतल के लिए उस का इतना ही बजट है।

आखिर में एक हिदायत भी दी है। कभी दूसरों को आप से ज्यादा ज़रूरत होती है इसलिए कोई चीज खोने पे दुःखी नहीं होना चाहिए। एक अजीब सी मुस्कराहट दौड़ गई मेरे होंठों पर। मैं उस का चेहरा याद करने की कोशिश करने लगी। याद ही नहीं आया क्योंकि मैंने तो देखा ही नहीं था बस केवल आवाज को जवाब देती रही। मैं तो अपने आप में ही मग्न रही। एक और इन्सान जो मेरे साथ दो घंटे रहा एक पल भी उसे आंख उठा कर नहीं देखा मैंने। आखिर मैं इतना व्यस्त किस बात में थी?? शकल नहीं पहचानती लेकिन अब उसे बहुत अच्छी तरह से जान गई थी। कोई तो अपना सा था।

### कोई अपना सा

एक्री का दरवाजा खींच कर जैसे ही मैंने पाँव अन्दर रखा 'कहाँ जाना है' उस की आवाज आई। पता तो लिख दिया है। मैंने दूसरा पाँव अन्दर खींचते हुए कहा। 'नही आया' वह बोला तो मैंने पता लिखा दिया। बस इतना सा वार्तालाप हुआ था हमारे बीच। 'ज्यादा ठंडा तो नहीं है।' आखिरी बार उसने पूछा तो मैं बोली 'नहीं ठीक है।' उसके बाद एक न टूटने वाली सुकून से भरी खामोशी। ज़हर लगते हैं वह लोग मुझे जो सफर में मेरी चुप्पी तोड़ने की कोशिश करते हैं। मैंने अपनी पीठ सीट से टिका कर आंखें मूंद ली। मेरे आई-पोड से छाया गांगुली की आवाज सदी की सुनहरी धूप सी छन छन कर मेरी नस नस में पिघल रही थी..... फूल बरसाता हुआ.....

बन्द आंखों से भी पता लग रहा था कि बेंगलोर की सड़कें अब काफी खराब हो चुकी हैं। ज़िन्दल नेत्रोपेथी सेंटर के गेट पर धीमी गति से गाड़ी रुकी तो मैंने बैग सम्भाला नीचे आकर उसे पैसे दिये। उस से अपना सूटकेस लिया और आगे बढ़ गई।

पानी पीने के लिए बोतल देखी तो पता चला कि टेकसी में भूल आई थी। पीछे देखा तो वह निकल चुका था। जानती थी कि बहुत परेशानी होगी। फिर याद आया कि टेकसी में पानी पी कर सामने की सीट के जेकट में रखी थी।

सारा दिन काफी व्यस्त रही। शाम को समय मिला तो देखा एक एस एम एस आया है। श्रीकान्त वी एस ने लिखा था। लिखा था कि वह मुझे टेकसी में सेन्टर तक लाया था और बहुत ही खुश था कि मैं अपनी बोतल गाड़ी में भूल आई हूँ। पडते ही मुझे गुस्से और हंसी दोनों का एहसास साथ में महसूस हुआ। आगे लिखा था कि जब मैं दुबारा टेकसी का यही ऐप इस्तेमाल करंगी तो पाऊंगी कि उस में २० रुपये जमा है। वह उसने इस पानी की बोतल के बदले में जमा किए हैं और बोतल रख ली है। मेरी भोहें तन गई। क्या मतलब - मेरी हड़बड़ाई नजर बाकी इबारात पे गई तो लगा यह

तो पूरी चिट्ठी है। अब मेरी जिज्ञासा और बढ़ गई। मैंने एक ही सांस में पूरा पढ़ डाला। उस का कहना था कि बहुत दिनों से बोतल खरीदना चाह रहा था कारण उस की हिचकियां उसे खाना खाते हुए आती हैं। और सिर्फ पानी पीने पर ही थमत है। ज्यादातर समय वह जहाँ पर होता है वहाँ उसे पानी नहीं मिलता।

और जो बोतल उसे पसंद आती वह मंहंगी होती है। ऐसा भी नहीं था कि लोग बोतल भूलते न थे लेकिन वह पलास्टिक की होती थी, ज्यादा देर इस्तेमाल नहीं कर सकते, सेहत के लिए हानीकारक है वह यह सब जानता था। विदेशी अच्छी मंहंगी बोतल भी भूल जाते हैं लेकिन वह उन्हें हाथ तक नहीं लगाता। कारण यह कि एक तो वह लोग बोतल से मूह लगा कर पानी पीते हैं दूसरा क्या जाने कोन बीमारी लगी हो। मेरी बोतल यू रखने का कारण था कि उसने देखा था कि मेने पानी मूह लगा कर नहीं बल्कि उपर से पिया था। चिट्ठी अभी ओर भी बाकी थी लिखा था कि वह जानता है बोतल मंहंगी है लेकिन 20 रुपये ठीक है। एक तो यह सेकमड हेन्ड है और उस से बड़ा कारण कि बोतल के लिए उस का इतना ही बजट है।

आखिर में एक हिदायत भी दी है। कभी दूसरों को आप से ज्यादा ज़रूरत होती है इसलिए कोई चीज खोने पे दुःखी नहीं होना चाहिए। एक अजीब सी मुस्कराहट दौड़ गई मेरे होंठों पर। मैं उस का चेहरा याद करने की कोशिश करने लगी। याद ही नहीं आया क्योंकि मैंने तो देखा ही नहीं था बस केवल आवाज को जवाब देती रही। मैं तो अपने आप में ही मग्न रही। एक और इन्सान जो मेरे साथ दो घंटे रहा एक पल भी उसे आंख उठा कर नहीं देखा मैंने। आखिर मैं इतना व्यस्त किस बात में थी?? शकल नहीं पहचानती लेकिन अब उसे बहुत अच्छी तरह से जान गई थी। कोई तो अपना सा था।





By A.k. Razdan

## शुभाभी परभावनू एणी / स्वामी परमानन्द जी

परभावनू एणी की कमभीरी हाधा मै लापी कविताएँ मुझ्झन का गुरु गुरु भेटु है एव वैपरी का मधुकरभागर भाग एता है। उन का एनु.०१७०० रं. के भीर कानिलगैरु गैव मै रुमु। उँने मपनी पुरभिक मिला मपने पिता पं. कृष्ण पण्डित मे पापु की। गुरु मे उँने जारभी एर मंभुत का ही प०न - पा०न किया। मपने पिता की मकभुत टैलाउ केने पर परभावनू एणी के पएवारी के पए पर काम करना पडा। कुळ मभय के पणुत पएवारी काम टुग कर उनके प्री उरु मे पिती पर गुहरा करना पडा। मणिक मभय भाएना एर रुक्ति मै वृतीउ करने लगे। पुरभु मे उँने जारभी मे कविता लापना मुरु किया। जारभी की कविताएँ उँने गरीर नाम मे लापी। उनकी जारभी मे गणित के उ ही कविता उपलब्ध नहीं है।

परभावनू एणी की मही कामीरी कविताउं का मुर गुरुत ही उँगा है एर रुर एक मवू उन की मृष्टाङ्गिक काष्ठा का टैतुक है। देवभाला एव वैगारुम उनके रुएने मे उन के प०न- पा०न के गरुन मनुके का काम करा है। वभुत: परभावनू एणी मी कृष्ण रुकु मे परनु वे मपनी कविताउं मे रंमुर के रुर मुरुप एर रुर रंग का गुल्ल गैव करुटे टिपारं टैते है। “राण भुवैवर” एर “भुलभा गणित” उनके कृष्ण रुक्ति के मुरु नभुने है। “मभरनाथ यादु”, “कर्मभूमिका”, “मभर पाने” उनकी कुळ पापुत गणनाएँ है। परभावनू एणी की पड़ी कुळ गिरुगिरी भुवाव की ची एव वरु परभावनू एणी के भाष एववकार मे पेम मुती थी। उन के परम मिधुलकुन गणनाएँ ए कि भुयं उम्र केए के कवि मे एर मपनी गणनाएँ लकुनए वलवल के नाम मे लापैते मे वे मपने गुरु परभावनू एणी के मपनी पड़ी मुरा एर एर मपनातिउं केते टैप गुरु टैपी के कर रैते गरुते। परभावनू एणी मपने मिधुलकुनए वलवल के वरुमभाए कर एप कराते कि रुर किभी के मपने मपने पुररु कर्म का रुगउना करना है, उरी गुरुभाउ मपना कर्म कराती है भुए एर रुम के मपने कर्म का निवारण एमी एमी करना गणना। मेरी पड़ीपिळले एनु मे गाथ थी एर मै एक के मू घा। गाथ के एम पर एक भाव घा एम के मै के वे के रुपमे एँग मे भांम नेएता गरुता घा। मै एप गप मपने। कर्मजल का रुगउना कर रुर ऊँ रुम मपने मपके है टैपी कर रुके है।

परभावनू एणी का टैलाउ ०३१७ रं. मे रुमु। उनकि भारी कविताउं का मंगेएणी मनुवाए भाभूरएिनटकेलएणी ने किया है ए एभु कामीर कलगल एकेरुभी ने पुकामितु किया है। परभावनू एणी की कविताउं के कुळ मंम...

मभर पाने र्भमंभार कृया  
मुदि देव मनुक ए मदि कार कृया  
कारव रोभुय गवभर उर कृया  
मउ वेणार, मउ वेणार।  
गोकुल रुदय भेन, उडि ऐन गुट वान  
ऐष विभन्न पीपुभावन गगवान॥  
गएि भंएु गाम सुव गानि ऐनया  
एय एय एय पीवुकी ननुनया॥  
करभुगभिका टिएि एरभुक गला  
मंउेम वृलि गवि मुननु टल॥  
गिनुनारु कृ एिनु (एँने) भरुना  
पानु रोभुय पान मंरुना  
मंरुए वेणार करुना

अमर पानो ब्रम संसार छुया  
आदि देव बननुक चे अदिकार छुया।  
हारव रोस्तुय बवसर तार छुया।  
सत वेचार, सत वेचार।  
गोकुल हृदय म्योन, तति चोन गूर्यवान  
चेथ विमर्श दीप्तिमान बगवान॥  
गटि मंजु गाश आव चानि जेनया।  
जय जय जय दीवुकी नन्दनया॥  
करमु बूमिका दिजि दरमुक बला।  
संतोश ब्यालि बवि आनन्दु फल॥  
गिन्दुनाह छु जिन्दु (ज्योन) मरुना  
पानु रोस्तुय पान सँरुना।  
संहज वेचार करुना।

# Core Sharada Team at Vishva Sarasavath Sang

कोर शारदा टीम के ३१ नवंबर के मैंगलोर में सुवैष्णव भारभूषण के विश्वव्यापी काट कुंभ के मंगम के दौरान गैलरी के लिए सुभारित किया गया था।

काट कुंभ का सुवैष्णव विश्व भारभूषण मंत्र (वीएएसएफ) द्वारा कामी भ० मंभूरन वाराणसी के परम पावन श्रीमद सम्यमिन्द्र तीर्थ स्वामीजी के मार्गदर्शन में किया गया था। कोर शारदा टीम के मद्रपुरा केम कौल, पद्मश्री कामीनाथ पंडित, डॉ अजय चुंगू, शोफाली वैद्य, आरती टीकू, लेफ्टिनेंट प्रीति मोहन, दिनेश कामथ, राकेश कौल और सुधाकर भट इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य प्रख्यात वक्ताओं के साथ उपस्थित थे।

यह हाल के दिनों में महत्वपूर्ण सम्मेलनों में से एक था जहां हिंदू सारस्वत और उनका इतिहास, कश्मीरी पंडितों का पलायन और सीखे गए पाठ, राष्ट्र निर्माण में सारस्वतों की भूमिका, संस्कृत - मातृभाषा, शारदा लिपि, और सारस्वत मठों की भूमिका जैसे विषय थे। सारस्वत एकता पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इस दौरान सारस्वत एकता की भविष्य की कार्ययोजना पर विचार किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में दुनिया भर से कश्मीरी सारस्वत पंडित, मोहयाल सारस्वत, राजस्थान सारस्वत, गौड़ा सारस्वत ब्राह्मण, चित्रपुरा सारस्वत और राजापुरा सारस्वत सहित विभिन्न सारस्वत भाग लेंगे।

भाषण में, कोर शारदा टीम ने शारदा लिपि के पुनरुद्धार की आवश्यकता, सारस्वतों के लिए इसकी प्रासंगिकता और स्क्रिप्ट पर काम करने के लिए आवश्यक संयुक्त प्रयासों पर जोर दिया। कश्मीर और शेष भारत के साथ संबंधों का पता लगाने के लिए पांडुलिपियों पर गहन शोध की आवश्यकता है।

स्क्रिप्ट के पुनरुद्धार की दिशा में कोर शारदा टीम की प्रस्तुति और प्रयासों की सराहना की गई और परम पावन श्रीमद सम्यमिन्द्र तीर्थ स्वामीजी के आशीर्वाद से, टीम को कार्यशाला में कोर शारदा टीम के काम को और अधिक विवरण में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। पुणे में सुश्री वेरोनिका पीर ने शारदा लिपि और उसके महत्व पर प्रस्तुति दी और स्वामी जी को प्रकाशित प्राइमरी पुस्तकें भेंट कीं।

कोर शारदा टीम को 27 नवंबर को मैंगलोर में आयोजित सारस्वतों के विश्वव्यापी कार्यक्रम के संगम के दौरान बोलने के लिए आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम का आयोजन विश्व सारस्वत संघ (वीएसएफ) द्वारा काशी मठ संस्थान वाराणसी के परम पावन श्रीमद सम्यमिन्द्र तीर्थ स्वामीजी के मार्गदर्शन में किया गया था।

कोर शारदा टीम के सदस्य राकेश कौल, पद्मश्री काशीनाथ पंडिता, डॉ अजय चुंगू, शोफाली वैद्य, आरती टीकू, लेफ्टिनेंट प्रीति मोहन, दिनेश कामथ, राकेश कौल और सुधाकर भट इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य प्रख्यात वक्ताओं के साथ उपस्थित थे।

यह हाल के दिनों में महत्वपूर्ण सम्मेलनों में से एक था जहां हिंदू सारस्वत और उनका इतिहास, कश्मीरी पंडितों का पलायन और सीखे गए पाठ, राष्ट्र निर्माण में सारस्वतों की भूमिका, संस्कृत - मातृभाषा, शारदा लिपि, और सारस्वत मठों की भूमिका जैसे विषय थे। सारस्वत एकता पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इस दौरान सारस्वत एकता की भविष्य की कार्ययोजना पर विचार किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में दुनिया भर से कश्मीरी सारस्वत पंडित, मोहयाल सारस्वत, राजस्थान सारस्वत, गौड़ा सारस्वत ब्राह्मण, चित्रपुरा सारस्वत और राजापुरा सारस्वत सहित विभिन्न सारस्वत भाग लेंगे।

भाषण में, कोर शारदा टीम ने शारदा लिपि के पुनरुद्धार की आवश्यकता, सारस्वतों के लिए इसकी प्रासंगिकता और स्क्रिप्ट पर काम करने के लिए आवश्यक संयुक्त प्रयासों पर जोर दिया। कश्मीर और शेष भारत के साथ संबंधों का पता लगाने के लिए पांडुलिपियों पर गहन शोध की आवश्यकता है।

स्क्रिप्ट के पुनरुद्धार की दिशा में कोर शारदा टीम की प्रस्तुति और प्रयासों की सराहना की गई और परम पावन श्रीमद सम्यमिन्द्र तीर्थ स्वामीजी के आशीर्वाद से, टीम को कार्यशाला में कोर शारदा टीम के काम को और अधिक विवरण में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। पुणे में सुश्री वेरोनिका पीर ने शारदा लिपि और उसके महत्व पर प्रस्तुति दी और स्वामी जी को प्रकाशित प्राइमरी पुस्तकें भेंट कीं।

## शारदा दिवस ३०३३ / Sharada Diwas 2022

कोर शारदा टीम करं वरुं मे गौरी उड़ीया दिवस के शारदा दिवस के रूप में बना रूनी को। यह वरुं की गुरु भद्रपूरु अएनाउं मेमे एक को। उम वरुं यह ३ द्वावरी ३०३३ के भनया गया। शारदा दिवस मभारैरु के दौरान कोर शारदा टीम ने शारदा गणाल मभिति के भाष सुगौरी भ० का दौरा किया और शारदा लिपि और शारदा भंडिर मे मंगणित परिषेणनाउं के भीरौउं उं गौरी मंकर स्त्री के पभुउ किया। उमके मलावा कोर शारदा टीम ने एक मंनलाउं काट कुंभ का सुवैष्णव किया था एकां उं केरु गभांमोपर ने पांडुलिपि विहान और उन परिषेणनाउं पर एक पभुउि दी थी एिन पर रुभारी टीम काम कर रूनी को। रुभारे भीरमपी मद्रुं के लिए एक विमेष सहिनंन काट कुंभ ही था, एिने, शारदा लिपि के गणवा एने के लिए उनके निभारु प्यामे और मभरुन के लिए परुणन गया था। शारदा दिवस के मुरु सुवभर पर पेभर विभेणन किया गया। पेभर के ही सुव वी भितारणर सुहिं

मुमी भावी हुए म्हरा हिरुउन किया गया था। पेभर में कोर शारदा टीम की वभुविक पंडिमरुता और म्मरुमिउ के म्मया गया को। पिळले वरुं ३०३० की उपल द्वियां उम सुवैष्णव का भापु

मुकरुं रूनी एस्पीमुरवीके मुल, गैंगलेर के केए म्मुं के गैण के विमेष रुप मे शारदा लिपि पडन, मडीभर शारदा म्मरु एरी करन म्मिउ विहिन भील के पडुर। उंठिका पाठुं के भाष रुभारे नाए काट कुंभ लउ शारदा लिपि का मुहरंरु ही पिळले माल मुरु किया गया था। रुभरे पिळले वरुं वरुं भारभूष टेरुंमन मैंगलेर और गण मे पुले मे शारदा लिपि के म्मरु के ही पभुउ किया। उमके मलावा रुभरे ३ मे ०५ माल की उम के म्मुं के लिए पेरिंग और शारदा लापन पंडिवेगिउ सुवैष्णव की। ३००० रुपवे का प्मभ प्रभरु मनाउन व्मु ने पापु किया, नगैनु एीरभ ने ३००० रुपवे का द्वितीय प्रभरु उवा मेएल एिन ने ००० रुपवे का उड़ीय प्रभरु एीउ।

**रुद्र ओ कल्ले रु पेसु**  
**हुर ओकदोह पोशु**

PRESERVE • PROTECT • PROPAGATE

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ति त्र्यम्बके वल्लभे भृगुत्रिं पुष्टिवर्धना ।  
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

We worship the Lord Tryambaka whose omnipresent grace, compassion and mercy provide all directions and who is perfect and the magnifier of the power of all living beings. Just like the ripe cucumber falls free from the connection to its stem, I pray that I may be set free of the bondage of death although not the bondage of immortality.

मिवरा दिग्भङ्गाः सुदामयाः शिवरात्रिपर्वणः शुभाशयाः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

PRESERVE • PROTECT • PROPAGATE

॥ त्रीनु म्भा पेसु ॥  
 ॥ तीनु ओठम् पोशु ॥

LEARN SHARADA - TEACH SHARADA - REVIVE SHARADA  
 type easy with satisarsharada.appspot.com

**DONATE**

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation  
 HDFC Bank, Airport Rd., Bangalore  
 Account No: 50200054809336  
 IFSC : HDFC00000075  
 (RTGS / NEFT)  
 (Income Tax exemption under 80G)

शुक्र शुक्र... तुक्र तुक्र...  
 कुम् कुम्? कुस कुसु? कुस कुसु?  
 रम रम? रम रम? रम रम?  
 क्य ह्यह? क्य ह्यह?  
 अर ह्यह? अर ह्यह?  
 दन ह्यह? दन ह्यह?  
 मित तु संपदा ह्यह... संख तु संपदा ह्यह...  
 भटन राम तु दुस्सन राम ॥ संतान गाय तु दुस्सन नाथ ॥

PRESERVE • PROTECT • PROPAGATE

**सुनु द्रुम**

शिवरात्रि पर्वणः शुभाशयाः

PRESERVE • PROTECT • PROPAGATE

उर टोपी भुष्टिका भोकर ।  
 गम नाम मुक्ति मुक्ति मुम्ग ॥  
 गक्ति षुनुव भुम्गी थकिष्णी ।  
 रुम्भ सिभाम रुम्बै मुकुलीनी ॥

(मुम्गकाः) रन्वीरुह

सुत्राक्षीय भारुखा विवभ  
 भाल कमीरि भेन पुत्रभ

Mother's tongue - Repository of cultural traditions

PRESERVE • PROTECT • PROPAGATE

मिवाग दिवुं कृत्ता करिभुं भका दलभा  
 निविभम्पु मे पाशु द्रुभा मा ग्गदुं ॥

शिवरात्रि पर्वणः शुभाशयाः

कैरष पेसु हेरथ पोशु

कैरष हेरथ पोशु  
 पेसु

भला मिवागदि की मुठका भनां  
 महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं

PRESERVE • PROTECT • PROPAGATE

THE KASHMIR FILES

**Activity Cart Of Previous Month**

1. Concluded the ongoing sharada lipi session with Indica courses.
2. 3 day Workshop on sharada lipi with national university of Australia.
3. Projects related to sharada temple and sharda lipi presented to the CEO of Shringeri Mutt Dr Gauri Shankar ji.

**For Learning Sharada or any other suggestions:-**

[facebook.com/Core-Sharada-Team-110148770831539](https://facebook.com/Core-Sharada-Team-110148770831539) [instagram.com/coreshardateam](https://instagram.com/coreshardateam)

[shardalipi.com](https://shardalipi.com)

[twitter.com/CoreSharada](https://twitter.com/CoreSharada) [maatrika.cst@gmail.com](mailto:maatrika.cst@gmail.com)

Phone - 98301 35616 / 90089 52222